डीकंट्रोल के बाद दुनिया भर के निवेशक सेक्टर पर बुलिश

शुगर सेक्टर में बढ़ी विदेशी फर्मों की दिलचस्पी

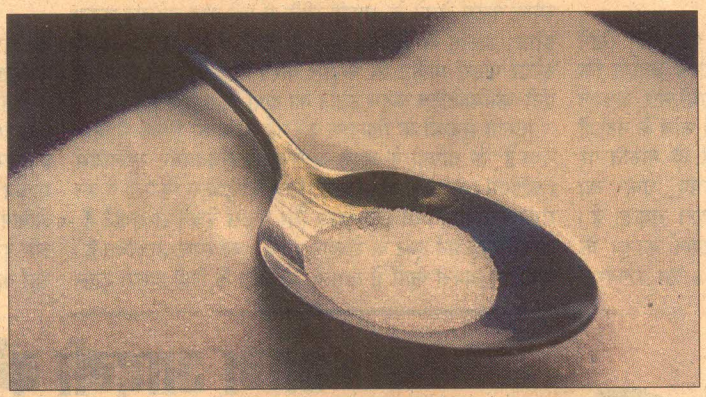

[श्रेया जय | माधवी सैली *नई दिल्ली*]

इंडिया में शुगर सेक्टर में विलय और अधिग्रहण तेज हो सकता है। यह सेक्टर जबरदस्त निवेश और बेहतरीन रीटेल प्रोडक्ट्स के लिए तैयार दिखता है। शुगर को डीकंट्रोल करने के सरकार के फैसले से दुनिया भर के निवेशकों में इंडिया के शुगर सेक्टर में दिलचस्पी बढ़ी है। देश में शुगर का मार्केट 80,000 करोड़ रुपए का है। अगले 5 साल में इसके बढ़कर दोगुना हो जाने की उम्मीद है। ऐसे में विदेशी फर्में शुगर इंडस्ट्री के टॉप लोगों से संपर्क साध रही हैं। सूत्रों के मुताबिक, संभावित निवेशक इस सेक्टर में मौजूद अवसरों का जायजा लेने में जुटे हैं। निवेशकों की पसंद देश का सबसे बड़े शुगर प्रोड्यूसर राज्य महाराष्ट्र है। उत्तर प्रदेश को लेकर उन्हें थोड़ी शंका है।

भारत ब्राजील के बाद दुनिया का सबसे बड़ा चीनी उत्पादक देश है। साथ ही, ग्लोबल स्तर पर शुगर की कीमतें तय करने में भारत की अहम भूमिका है। जारनिकोव, कारगिल, नोबल, ग्लेनकोर, सिंगापुर की विल्मर और थाइलैंड की मित्रपोल जैसी कंपनियों का भारतीय बिजनेस पहले से ही काफी सफल है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन(आईएसएमए) के डायरेक्टर जनरल अविनाश वर्मा ने बताया, 'मुझे ग्लोबल कंपनियों से भारतीय बाजार में अवसरों के बारे में जानकारी के लिए कॉल आते रहते हैं। शुगर मार्केट में नए घरेलू और मल्टीनेशनल खिलाड़ी देखने को मिल सकते हैं। इस सेक्टर में ज्वाइंट वेंचर और अधिग्रहण की भी जबरदस्त संभावना है।' पिछले हफ्ते सरकार ने चीनी मिलों को अपना पूरा शुगर प्रोडक्शन बिना किसी पाबंदी के ओपन मार्केट में बेचने की अनुमति देने का फैसला किया। कई दशकों से शुगर इंडस्ट्री पर सरकार का नियंत्रण था। इस ऐलान के बाद शुगर फर्मों के शेयरों में तेजी देखने को मिल रही है।

वर्मा ने बताया कि विदेशी फर्म मौजूदा कंपनियों के अलावा नए प्रोजेक्ट में भी निवेश करेंगी। फिलहाल, शुगर इंडस्ट्री में काफी कम ज्वाइंट वेंचर हैं और विदेशी कंपनियों की संख्या नहीं के बराबर है। इंटरनेशनल कंपनियां पहले से उन इलाकों की पहचान करने में जुटी हैं, जहां की फर्मों में वे निवेश करेंगी। इस सेक्टर में दिलचस्पी रखने वाले प्रमुख मल्टीनेशनल कंपनी के एक अधिकारी ने बताया, 'बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाएगी। इस सेक्टर में जल्द ही कंसॉलिडेशन शुरू हो जाएगा। महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में छोटी और मीडियम साइज की कंपनियों के अधिग्रहण की जबरदस्त संभावना है। राजनीतिक दखल और गलत सरकारी नीतियों के कारण फिलहाल उत्तर प्रदेश बेहतर विकल्प नहीं है।' कुछ विदेशी कंपनियां पहले से शुगर सेक्टर में यहां मौजूद हैं। सिंगापुर की ओलाम इंटरनेशनल ने 2009 में मध्य प्रदेश के बारवानी जिले में मौजूद गिरधारीलाल शुगर एंड एलायड इंडस्ट्रीज लिमिटेड का अधिग्रहण किया था। यह कंपनी का पहला अधिग्रहण था।

शुगर का मार्केट 80,000 करोड़ रुपए का है। अगले 5 साल में इसके बढ़कर दोगुना हो जाने की उम्मीद है

Economic times 8/4/13